इकाई 4 नीति और लोककथाएँ

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 नीति तथा लोककथाओं का उद्भव और विकास

4.3 पंचतन्त्र

4.4 हितोपदेश

4.5 वेतालपंचविंशतिका

4.6 सिंहासनद्वात्रिंशिका

4.7 पुरुष-परीक्षा

4.8 सारांश

4.9 शब्दावली

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- संस्कृत साहित्य के नीतिकारों का परिचय बता सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य की प्रमुख नीतियों की विशेषताएं समझा सकेंगे।
- नीतियों का उद्भव कब हुआ तथा नीतिपरक कथाएं किन-किन ग्रन्थों में हैं, इन्हें आप भली-भाँति समझा सकेंगे।
- उपदेशपरक नीति कथाओं की रचना करके कवियों ने जनमानस को व्यावहारिक नीतिशास्त्र बताया है, इस तथ्य का आप भली-भाँति विश्लेषण कर सकेंगे।
- मानव व्यवहार के अतिरिक्त पशु-पात्र प्रधान कथाओं के द्वारा भी समाज को नीति बताने वाली कथाएँ लिखी गई हैं, उन कथाओं का आप परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य में कवियों ने लोककथाओं के माध्यम से रुचिकर संवादों में व्यावहारिक नीतिशास्त्र का उपदेश किया है, आप इसका उल्लेख कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में वैदिक युग से ही नीतिपरक उपदेशों की परम्परा चली आ रही है, जिसमें विभिन्न मनुष्यों ने अपने अनुसार नीतिकथाओं के विधानों एवं नीतिवचनों के वर्णन किए हैं। इस इकाई के अन्तर्गत आप संस्कृत वाङ्मय में वर्णित नीतियों का अध्ययन करेंगे। वस्तुतः नीति के उद्भावक ब्रह्मा और प्रतिष्ठापक विष्णु हैं। कालान्तर में मध्यकाल से लेकर आधुनिक युग तक नीतियों का अत्यधिक प्रसार हुआ है, जिनमें शुक्रनीति, चाणक्यनीति, विदुरनीति, पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि नीतियाँ प्रमुख व प्रसिद्ध हैं। विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र में पशु-पात्रों का चयन करके सभी भागों में अत्यन्त व्यावहारिक नीतिशास्त्र की रचना की गई है।

पंचतन्त्र की कथाएं पशुओं में मानवोचित क्रियाकलापों का दर्शन कराती हैं। पंचतन्त्र के आधार पर नारायण पण्डित ने हितोपदेश नामक कथा-ग्रन्थ की रचना की जिसमें लोक कथाओं के माध्यम से उन्होंने समाज को शिक्षित करने का प्रयास किया। हितोपदेश के भी चार भाग किए गए जिनमें विभिन्न रूप से लोककथाएं ,कूटनीतियाँ आदि समाहित की गई हैं। इस प्रकार वैदिक युग से लेकर सिद्धान्तपरक नीतियों की रचना के अतिरिक्त आधुनिक काल में लोककथाओं का विकास बेतालपच्चीसी तथा सिंहासनबत्तीसी नामक ग्रन्थों में रुचिकर कथाओं के माध्यम से व्यावहारिक नीतिशास्त्र का उपदेश पदे-पदे दृष्टिगोचर होता है। पुरुष-परीक्षा नामक कथाग्रन्थ तो नाम से ही पुरुषों की परीक्षा का ग्रन्थ लगता है।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप वैदिक काल से नीति की उत्पत्ति का ज्ञान करते हुए कथाओं के माध्यम से किस प्रकार संस्कृत साहित्य में नीतियों का उपदेश किया गया है, इसका सहज विश्लेषण कर सकेंगे ।

4.2 नीति तथा लोककथाओं का उद्भव और विकास

नीति शब्द 'नी' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय से जुड़कर बना है,जिसका अर्थ है जिस मार्ग (व्यवहार) से व्यक्ति और समाज का जीवन सरलता के साथ व्यतीत हो उसे नीति कहते हैं। नीति का अर्थ सही मार्ग की ओर ले जाना है, नीति का सही रूप में पालन करने से व्यक्ति एवं समाज दोनों का कल्याण होता है।

नीति के अर्थ को हम कई प्रकार से जान सकते हैं। मनुष्य जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधन रूप में जिन बातों की आवश्यकता है, वही नीति है। समाज में रहने वाले व्यक्ति, वर्ग, जाति आदि भिन्न-भिन्न घटक हैं। यहाँ रहकर परस्पर उनको कैसा व्यवहार करना चाहिए इसके कुछ विशेष नियम होते हैं, वही नीति है। चार पुरुषार्थों– धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन्हें प्राप्त करने के उपायों का निर्देश जिसके द्वारा होता है वही नीति है। नीति शब्द का अर्थ होता है ले जाना, पहुँचाना, दिग्दर्शन कराना, नेतृत्व करना तथा उपायों को बतलाना। नीतिवचनों के अनुसार यदि मनुष्य व्यवहार करता है तो वह अभीष्ट फल प्राप्त करता है, मनुष्य यदि नीति के विरुद्ध आचरण करता है तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हो जाता है। नीतिशास्त्र के ज्ञाता चाणक्य का सर्वप्रथम वाक्य है– **'सुखस्य मूलं धर्मः'** सुख का मूल आधार धर्म है इसलिये सबसे उत्तम नीति धर्माचरण ही है, क्योंकि संसार का प्रत्येक प्राणी सदैव सुख की ही आकाँक्षा रखता है और नीति का सहारा भी वह केवल अपने सुख के लिए ही करता है। ऋग्वेद में नीति का प्रयोग अभीष्ट फल की प्राप्ति से है–**'ऋजुनीति नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्'** (ऋक् 1/90/1) इसमें मित्र और वरुण से प्रार्थना करते हुए कहा है कि हमें ऋजु अर्थात् सरल नीति से अभीष्ट फल की सिद्धि होती है। संस्कृत भाषा में नीति साहित्य का विशाल भण्डार है। इसमें नीति उपदेशों का संग्रह है, नीतिशास्त्र के उद्भावक परमपिता ब्रह्मा, प्रतिष्ठापक विष्णु और प्रवर्तक शंकर हैं। वैदिक संस्कृत साहित्य में नीति-वचनों का प्रचुर भण्डार पड़ा है वहीं दूसरी ओर लौकिक संस्कृत साहित्य में पुराणों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों एवं विभिन्न नाटकों में भी भिन्न-भिन्न धाराओं से परिपूर्ण नीति का भण्डार दृष्टिगोचर होता है। नीति-वचनों के विशेष संग्रह वाल्मीकीय रामायण के सातवें काण्ड में भरे पड़े हैं। महाभारत में भी उद्योग पर्व के आठवें अध्याय में महात्मा विदुर द्वारा कथित नीति-वचन विदुर नीति के नाम से सुप्रसिद्ध है। इसी प्रकार महाभारत के ही भीष्म पर्व के 25वें तथा 42वें अध्याय में सम्पूर्ण विश्व में विख्यात श्रीमद्भगवद्गीता तथा योगशास्त्र के साथ-साथ ब्रह्मविद्या से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण नीतिशास्त्र है। महाभारत के शान्ति पर्व का वर्णित राजधर्म तो राजनीति ही है, इन समस्त नीतियों की चर्चा परवर्ती नीति ग्रन्थों में पदे-पदे उद्धृत की गई,

जैसे– विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र और हितोपदेश आदि में भी महाभारत की नीतियों की चर्चा है। भारतीय इतिहास के महामनीषी चाणक्य ने अपने ग्रन्थ कौटिल्य अर्थशास्त्र के अन्तर्गत नीति-वचनों का वर्णन किया है, इसके अतिरिक्त चाणक्यनीति, चाणक्यनीतिदर्पण और चाणक्यनीतिसूत्र आदि ग्रन्थों में भी उनके नीति वचनों का संग्रह है।

वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक संस्कृत साहित्य में राजनीति, धर्मनीति आदि का सृजन प्रणयन तो हुआ किन्तु शुक्र, विदुर, चाणक्य, भर्तृहरि आदि प्रमुख नीतिकारों ने नीति सिद्धान्तों के अनुसरण में वर्णन की प्रधानता रखी। इसके अलावा नीति साहित्य में एक अलग प्रकार की विधा के अन्तर्गत उपदेशक नीतिकथाओं के माध्यम से, पशु पात्रों के संवादों के माध्यम से रुचिकर कथाओं को आधार बनाते हुए विष्णुशर्मा ने पंचतन्त्र में नीति का सृजन किया। विष्णुशर्मा का पंचतन्त्र संस्कृत के कथासाहित्य के अन्तर्गत उपदेशप्रद पशुपात्र प्रधान कथाग्रन्थ है। सामाजिक सरोकारों की अनुभूति के साथ-साथ मनुष्य और प्रकृति के किस प्रकार के सम्बन्ध हैं या मनुष्य की भाँति पशुओं का भी समाज किस तरह अपने भावों को प्रकट करता है, किन-किन नियमों के अनुसार जीवन की सफलताओं के दर्शन करता है। इस तरह के नीतिपरक रुचिकर तथ्य विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र, हितोपदेश और कथासरित्सागर में तो पाए ही जाते हैं, प्रसिद्ध लोककथाओं में नीतियों का विकास संस्कृत की दो कथाओं में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है – वेतालपंचविंशतिका तथा सिंहासनद्वात्रिंशिका। यह दोनों संस्कृत की लोककथाएँ हैं। इन्हें हिन्दी में सिंहासनबत्तीसी तथा वेतालपच्चीसी कहते हैं। इस प्रकार आपने देखा कि नीति का उद्भव मानवीय मूल्यों के मध्य तो हुआ ही है बल्कि कवियों ने पशुओं के संवाद और उनकी जीवन शैली में भी नीतियों का सृजन किया है। अतः नीतियों का ज्ञान करने के साथ-साथ लोककथाओं के माध्यम से भी नीतियों को भली-भाँति जानने के लिए हमें सर्वप्रथम पंचतन्त्र नामक ग्रन्थ का सिंहावलोकन करना चाहिए।

4.3 पंचतन्त्र

संस्कृत के कथासाहित्य में यह ग्रन्थ पशु-पात्रों से प्रधान रूप से सुशोभित किया गया है। वैदिक साहित्य, महाभारत तथा बौद्ध और जैन साहित्य में भी इस ग्रन्थ के विकास के बीज हैं। इस ग्रन्थ में विष्णुशर्मा ने पशुओं में मानवोचित क्रियाकलाप का दर्शन कराया है। पंचतन्त्र के अध्ययन से ही पता चल जाता है कि इसके रचयिता व्यावहारिक नीतिशास्त्र के अपार ज्ञाता थे। इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण कथाओं में पशु-पात्रों के संवादों का ही अध्ययन किया जाता है, इनमें मानव क्रिया-कलापों का पूरा-पूरा आरोप दिखाई देता है। सम्भवतः छान्दोग्य उपनिषद् में श्वानों की कथा, जिसमें सभी श्वान अपने एक श्वान नेता की तलाश करते हैं, ऐसी कथा भी पंचतन्त्र की रचना में प्रेरणा बनी होगी। नाम से ही लगता है कि पंचतन्त्र के 5 भाग होंगे। सम्पूर्ण ग्रन्थ पाँच तन्त्रों में उपलब्ध है– मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलुकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारकम्। पंचतन्त्र अपने इन्हीं पाँच भागों में अनेक कथाओं के माध्यम से व्यावहारिक नीतिशास्त्र का प्रदर्शन करता है।

मित्रभेद के अन्तर्गत एक चतुर शृगाल के द्वारा पिंगलक नामक सिंह और संजीवक नामक वृषभ के बीच मित्रता में फूट डालने के लिए मुख्य कथा का सृजन किया गया है। इसमें राजनीति से सम्बन्धित विवादों के साथ-साथ पशु पक्षियों के बीच मनोरंजक कथाएं प्राप्त होती हैं। इसमें कुल 22 कथाएं हैं– पिंगलक, संजीवक-दमनक कथा, कीलोत्पाटी वानर की कथा, शृगाल और दुंदुभी की कथा, दन्तिल और गोरम्भ की कथा, आषाढ भूति-प्रतिभूति की कथा ,गौरैया और बन्दर की कथा, धर्म बुद्धि और पाप बुद्धि की कथा, कृष्ण सर्प एवं नकुल की कथा, राजा और उसके सेवक वानर की कथा आदि कुल प्रमुख 22 कथाएँ हैं। इन

कथाओं में लोकरंजन के साथ-साथ नीतिपरक उपदेशों की प्राप्ति भी सहज हो जाती है। मित्रसम्प्राप्ति नामक भेद के अन्तर्गत चित्रग्रीव नामक कपोत, हिरण्यक नामक मूषक, लघुपतनक नामक काक, चित्रांग नामक हरिण, मन्थरक नामक कच्छप की कथाएं मुख्य रूप से कही गई हैं। इन कथाओं में मित्र संग्रह के आकर्षक रूप का वर्णन किया गया है। काकोलुकीय नामक पंचतन्त्र के तीसरे तन्त्र में काक और उल्लू के जन्मजात बैर भाव के दृष्टान्त के द्वारा युद्ध और सन्धि के बहुत ही रुचिकर सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। इसके अन्तर्गत कुल 19 कथाओं के वर्णन प्राप्त होते हैं। लब्धप्रणाश नाम के चौथे तन्त्र में रक्तमुख नामक वानर तथा करालमुख नाम के मगर की कथा के द्वारा उपलब्ध वस्तु के नष्ट हो जाने की स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए समाज को नीतिपरक शिक्षा प्रदान की गई है। इस तन्त्र में कुल 12 कथाएं मिलती हैं– वानर तथा मगर की मैत्री कथा से लेकर सियार और सिंह की कथा तथा कुत्ते की कथा के साथ इस तन्त्र का वर्णन समाप्त किया गया है। अपरीक्षितकारकम् नामक पंचतन्त्र के पाँचवे तन्त्र में बताई गई कथाएं हमें यह शिक्षा देती हैं कि बिना सोचे समझे किए गए कार्यों का परिणाम सफल और सुखदाई नहीं होता। अतः कोई भी कार्य सोच समझ कर करना चाहिए इन्हीं से सम्बन्धित कुल 14 कथाएं इस तन्त्र में बताई गई हैं। जिसमें प्रथम कथा मणिभद्र नामक श्रेष्ठी तथा नापित की है, अन्तिम कथा भारुंड नामक पक्षी की है। पंचतन्त्र नामक कथाग्रन्थ बहुत ही लोकप्रिय रहा है। भारत के अलावा भी इसकी वाचनाएं प्राप्त होती हैं, जिसमें तन्त्राख्यायिका पंचतन्त्र की कश्मीरी वाचना कही जाती है। दक्षिण भारतीय पंचतन्त्र भी उपलब्ध होता है, नेपाली पंचतन्त्र भी पाया जाता है। इस वाचना के अन्तर्गत गद्य और पद्य दोनों का ही अस्तित्व प्राचीन काल से विद्यमान था। पंचतन्त्र का हितोपदेश नामक संस्करण ईसा की नवीं शताब्दी के आस-पास नारायण भट्ट नामक विद्वान् ने बनाया था इसी के आधार पर उन्होंने हितोपदेश नामक लोकप्रिय कथाग्रन्थ का प्रणयन किया। अतः पंचतन्त्र नामक नीतिप्रद कथाग्रन्थ का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेने के पश्चात् अब आप आगे हितोपदेश का अध्ययन करके दोनों कथाग्रन्थों का प्रतिपाद्य बता सकेंगे।

4.4 हितोपदेश

यह बहुत लोकप्रिय और व्यापक कथाग्रन्थ है। इसकी रचना पंचतन्त्र के आधार पर उपदेशपरक कथाग्रन्थ के रूप में की गई है। नारायण पण्डित नामक विद्वान् ने इसकी रचना की है जो राजा धवलचन्द्र के आश्रित बताए जाते हैं। वस्तुतः यह रचना पंचतन्त्र पर ही आधारित है किन्तु पंचतन्त्र के मूल कलेवर में पर्याप्त परिवर्तन करते हुए कवि ने हितोपदेश के कलेवर को चार भागों में बाँटा है– मित्रलाभ, सुहृदभेद, विग्रह, सन्धि। इन्हीं चार भागों के अन्तर्गत रचनाकार के द्वारा 17 नवीन कथाओं का सन्निवेश करते हुए 7 पशुपात्र प्रधान कथाएँ, 5 कूटनीतिमूलक कथाएं तथा तीन लोककथाश्रित और दो उपदेशात्मक कथाएं लिखी गई हैं। बालकों को कथा के द्वारा नीति की शिक्षा देना ही हितोपदेश का लक्ष्य है– **'कथाच्छालेनबालानां नीतिस्तदिह कथ्यते'**। इस उद्देश्य की पूर्ति में नारायण पण्डित सर्वदा सफल भी हैं। एक ओर हितोपदेश नीतिकथा के माध्यम से अनुशासित जीवन, सफल जीवन, अनिन्दित जीवन जीने का मार्ग सिखाता है तो दूसरी ओर हितोपदेश संस्कृत शिक्षण की अद्भुत पुस्तक मानी गई है। यूरोप में अनेक भाषाओं में हितोपदेश का किया गया अनुवाद इस बात का प्रमाण है। प्रस्तावना को लेकर मित्रलाभ में कुल 10 वर्णन हैं जिनमें नौ कथाएं हैं। लघुपतनक नाम के कौवे की कथा, प्रथम कथा है तथा कर्पूरतिलक नामक हाथी की कथा अन्तिम कथा है। हितोपदेश के द्वितीय भाग सुहृदभेद में कुल नौ कथाएं मिलती हैं जिनमें वर्धमान नामक वणिक की कथा से लेकर टिटिहरी के जोड़े तथा समुद्र की कथा का वर्णन पाया जाता है। तृतीय भाग विग्रह के अन्तर्गत भी 10 कथाएँ हैं

जिनमें हिरण्यगर्भ नामक राजहंस, चित्रवर्णन नामक मयूर तथा दीर्घमुख नामक बगुले की कथा से प्रारम्भ करके चूड़ामणि नामक क्षत्रिय,नापित तथा भिक्षुक की कथा के साथ तीसरे भाग का वर्णन समाप्त होता है। हितोपदेश के चतुर्थ भाग सन्धि में कुल 13 कथाएं हैं जिनमें प्रथम कथा हंस और मयूर के मेल की है। इसके अलावा अन्तिम तेरहवीं कथा माधव नामक ब्राह्मण और उसके द्वारा पालित नेवले की है।

बोध प्रश्न 1

1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (√) कथन का चयन कीजिए –

   i) पंचतन्त्र के रचयिता नारायण पण्डित हैं – ( )

   ii) पंचतन्त्र का विभाजन पाँच भागों में हुआ है – ( )

   iii) मित्र सम्प्राप्ति पंचतन्त्र का भाग नहीं है – ( )

   iv) नीति का अर्थ अभीष्ट फल की प्राप्ति कराना है, ऐसा ऋग्वेद का कथन है– ( )

   v) विष्णुशर्मा ने हितोपदेश की रचना की है – ( )

   vi) पशुपात्र प्रधान कथाग्रन्थ का नाम पंचतन्त्र है – ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

   i) पिंगलक, दमनक कथा का वर्णन ..... में है।

   ii) राजा और उसके सेवक वानर की कथा का वर्णन ..... में है।

   iii) चित्रग्रीव नामक कपोत की कथा का वर्णन ..... में है।

   iv) काक और उलूक का तात्पर्य ..... है।

अभ्यास प्रश्न

i) नीति तथा लोककथाओं के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

ii) पंचतन्त्र कथाग्रन्थ में वर्णित विषय अत्यन्त संक्षेप में लिखिए।

4.5 वेतालपंचविंशतिका

पंचतन्त्र के बाद पशु पक्षियों की कहानियाँ लुप्तप्राय हो गईं। बृहत्कथा के बाद भी कोई उस परम्परा का अनुगामी ग्रन्थ नहीं दिखा। रोचक लोककथाओं का एक सुन्दर तथा सुव्यवस्थित ग्रन्थ वेतालपच्चीसी उपलब्ध होता है जिसे संस्कृत में वेतालपंचविंशतिका कहते हैं। विद्वानों की परम्परा में इसे स्वतन्त्र कथाग्रन्थ माना गया है। अनेक मतों में यह बृहत्कथामंजरी तथा कथासरित्सागर से प्रभावित रचना मानी जाती है। वेतालपच्चीसी की कहानियों का सबसे प्रचलित रूप 11वीं शताब्दी के क्षेमेन्द्र तथा सोमदेव के ग्रन्थ में पाया जाता है। वेतालपच्चीसी की रचना जम्भलदत्त ने की जो पूर्णतया गद्य में है। वेतालपच्चीसी की कथाएं अत्यन्त रोचक, बुद्धिवर्धक तथा कौतूहल का उत्पादन करने वाली हैं। वेतालपंचविंशतिका में विक्रमसेन के बौद्धिक उत्कर्ष से प्रकाशित 25 कहानियाँ निबद्ध की गई हैं। इस लोककथा ग्रन्थ के प्रारम्भ और उपसंहार की संरचना इस प्रकार देखी जा सकती है –

राजा त्रिविक्रमसेन को एक भिक्षु प्रतिदिन एक फल लाकर दिया करता था जिसे वे अपने कोषाध्यक्ष को दे देते थे। यह क्रम 10 वर्षों तक चलता रहा। एक दिन राजा को संयोगवश ज्ञात हो गया कि प्रत्येक फल में एक-एक रत्न निहित रहता है। कोषाध्यक्ष से पता लगाने

पर बात सच निकली। राजा का हृदय उस भिक्षु की असाधारण राजभक्ति को देखकर उसकी ओर आकृष्ट हो गया। एक दिन राजा द्वारा प्रणाम कर इस मूल्यवान वस्तु का कारण पूछे जाने पर वह भिक्षु राजा को एकान्त में ले गया और कहने लगा कि मुझे एक मन्त्र की साधना करनी है जिसमें किसी वीर पुरुष की सहायता की आवश्यकता है। आपसे उपयुक्त वीर कौन मिलेगा। आगामी कृष्ण चतुर्दशी को मैं श्मशान घाट पर वट वृक्ष के नीचे प्रतीक्षा करूँगा। अवसर आते ही राजा वहाँ के लिए निकल पड़े। श्मशान पहुँचकर उन्होंने भयंकर दृश्य देखे। राजा ने भिक्षु के पास जाकर कहा मैं आ गया हूँ अपना काम बताओ। भिक्षु ने कहा कि राजन् यहाँ से दक्षिण दिशा में जाइए बहुत दूर जाने पर शिंशपा नाम का एक वृक्ष मिलेगा, उस वृक्ष की डाल से एक मृतक का शरीर लटक रहा है, उसे आप यहाँ लाकर रख दीजिए और मेरा काम पूर्ण करिए।

दृढ प्रतिज्ञा वाले राजा ने शिंशपा वृक्ष के पास पहुँचकर उसकी डाल से शव को गिराया और जैसे ही उसे लाना शुरू किया पुनः वह शव शरीर उसी डाल पर जा लटका और अट्टाहस करने लगा। ऐसा देखकर राजा ने समझ लिया कि इसके शरीर में कोई वेताल अधिष्ठित है। अगली बार पूर्ण साहस से राजा ने दोबारा उस शव को डाल से गिराया और अपने कन्धे पर लेकर चल पड़े। रास्ते में उस शरीर में अवस्थित वेताल ने राजा को एक उलझन भरी कहानी सुनाई और कहा कि तुम इसका समाधान कर दो नहीं तो तुम्हारे सिर के सौ टुकड़े हो जाएंगे। राजा ने समाधान किया, पुनः वह वेताल उसी स्थान पर लौट गया। राजा फिर उस वृक्ष के पास गए और उसके शरीर को लाने का प्रयास करते रहे ऐसा करते करते 23 बार तक यह क्रम चला। चौबीसवीं बार ऐसी उलझन भरी कहानी वेताल ने सुनाई कि राजा उसका समाधान नहीं कर सका। राजा शव को लेकर चलता चला जा रहा था पुनः वेताल ने सोचा कि यह समाधान नहीं कर पा रहा है तो राजा से उसने कहा कि तुम इस अंधेरी रात में श्मशान में बार-बार आने-जाने के कष्ट को झेलते रहे और डरे नहीं इसलिए मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ। तुम्हारी दृढता और धैर्य से प्रसन्न होकर मैं इस शव से बाहर हो जाता हूँ। तुम इस शव शरीर को लेकर भिक्षु के पास जाओ । वह भिक्षु इस शरीर में आज रात मेरा आवाहन करके पूजन करेगा फिर वह तुम्हें साष्टांग प्रणाम करने के लिए कहेगा ताकि वह तुम्हारी बलि चढा दे। हे राजा! तुम कहना कि मुझे साष्टांग प्रणाम करने नहीं आता है। पहले तुम साष्टांग प्रणाम करके दिखाओ तब मैं उसका अनुकरण करके करूँगा। ऐसा होते ही जब भिक्षु साष्टांग प्रणाम करेगा तो तुम उसका सिर काट देना। इसलिए जिन सिद्धियों की इच्छा वह भिक्षु करता है वह सारी सिद्धियाँ तुम्हें प्राप्त हो जाएंगी। ऐसा कहते हुए वेताल शव से निकलकर बाहर चला गया और राजा ने उस शव शरीर को भिक्षु के पास लाकर रख दिया। राजा ने वेताल की कथा अनुसार ही सारे कार्य किए और भिक्षु के सिर की बलि चढा दी। इस पर शमशान के निवासी सारे भूत, प्रेत और वेताल प्रसन्न हुए और राजा की बहुत प्रशंसा की। उनसे वर माँगने को कहा फिर राजा ने कहा कि आपने मेरी सहायता की है। अतः यह पच्चीसों कथाएं संसार में सुप्रसिद्ध हों यही वरदान माँगता हूँ। प्रसन्न होकर वेताल ने कहा कि यह पच्चीसों कथाएं संसार में वेतालपंचविंशतिका के नाम से सुप्रसिद्ध और समादृत होंगी।

4.6 सिंहासनद्वात्रिंशिका

इस कथाग्रन्थ को सिंहासनबत्तीसी भी कहते हैं। ऐसी किंवदन्ती है कि विक्रमादित्य को देवराज इन्द्र ने एक दिव्य सिंहासन उपहार में प्रदान किया था जिसमें दिव्य आत्माओं से अधिष्ठित 32 पुत्तलियाँ लगी हुई थीं। शालिवाहन के द्वारा पराजित होने के बाद अन्तिम बार उन्होंने सिंहासन पर बैठकर पुत्तलियों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि मेरे देहावसान के 500 वर्षों के बाद भोज नामक राजा पृथ्वी के गर्भ से इस सिंहासन को प्राप्त कर लेगा

और इस पर बैठने के लिए उत्सुक होगा। तुम सभी उससे मेरे महान् कर्मों का वर्णन करोगी और उसके बाद मुक्त होकर स्वर्ग में अपना स्थान ग्रहण करोगी। इतना कहकर वह सिंहासन से उतर पड़े और उसे धरती के अन्दर छिपा दिया गया। 11वीं शताब्दी ई. में धारा नरेश भोजराज एक दिन अपने मन्त्री के साथ शिकार खेलने के क्रम में जंगल में घूम रहे थे तभी एक टीले के नीचे जमीन के अन्दर गड़े हुए सिंहासन का पता लगने पर उन्होंने उसे निकलवाया और बड़े ही धूमधाम से उसका पूजन किया। शान्ति पाठ ,वेद पाठ और ब्राह्मण भोजन जैसे माँगलिक विधि-विधानों के बाद जब सिंहासन पर बैठने के लिए उन्होंने पैर बढाया तभी पहली सीढ़ी पर खड़ी पुत्तली ने उन्हें रोकते हुए विक्रमादित्य के जन्म और उनकी दैवी सिद्धियों के सम्बन्ध में आख्यान कह सुनाया और उनसे पूछा कि क्या आप समझते हैं कि उनका कोई भी गुण सौवें अंश में भी आप में विद्यमान है। जिससे आप इस सिंहासन पर बैठकर शासन कर पाएंगे? पुत्तली की बात सुनकर राजा भोज आश्चर्यचकित हो गए। वे वापस लौट गए, किन्तु बार-बार ऐसा होने पर और बार-बार पुत्तलियों द्वारा विक्रमादित्य की गाथा सुनाए जाने पर भोजराज वापस लौटते रहे। अन्त में उनके धैर्य को देखकर पुत्तलियों ने कहा कि हे राजन्! हम सभी ने अपने कर्तव्य का पालन किया अब आप इस सिंहासन पर 1 वर्ष तक बैठकर शासन कर सकते हैं। इतना कहने के बाद वे सभी पुत्तलियाँ बन्धन मुक्त होकर स्वर्ग चली गईं। इस लोककथा ग्रन्थ के भी कई संस्करण मिलते हैं जिनमें क्षेमंकर रचित जैन संस्करण प्रामाणिक माना गया है। इस कथाग्रन्थ में प्रत्येक कथा के आरम्भ तथा अन्त में श्लोकों का सन्निवेश अवश्य किया गया है। उन्हीं श्लोकों में कथाओं की विषय-वस्तु का उल्लेख किया गया है। इस कथाग्रन्थ का एक दक्षिण भारतीय संस्करण भी प्राप्त होता है। इसके गद्यभाग में सूक्तिमूलक श्लोक पाए जाते हैं।

4.7 पुरुष-परीक्षा

पुरुष-परीक्षा की रचना विद्यापति ने की है। यह उपदेशात्मक संस्कृत कथासाहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें पशु-पक्षी जैसे पात्रों के स्थान पर समसामयिक आदर्श चरित्रों को प्रस्तुत किया गया है जो कलियुग में उत्पन्न हैं। इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार का मानना है कि पुरुष वही है जिसके व्यक्तित्व में वीरता हो, सुबुद्धि हो, विद्या तथा पुरुषार्थ चतुष्टय का ठीक से समन्वय हो। यदि व्यक्ति इससे रहित है तो वह केवल पुरुष की भाँति आकार-प्रकार धारण करता है और वह बिना पूँछ और सींग के पशु ही है। पुरुष-परीक्षा नाम ही इस ग्रन्थ का अभिप्राय सिद्ध करता है। मंगलाचरण में आदिशक्ति की वन्दना करते हुए विद्यापति ने कहा है कि एकबार जब चन्द्रातपा नगरी के राजा पारावार ने अपनी सर्वगुणसम्पन्न पुत्री के अनुरूप वर के लिए विचार किया तथा मुनिवर सुबुद्धि के पास जाकर प्रश्न किया तब उन्होंने कहा कि वीरता, सुबुद्धि, सद्विद्या तथा पुरुषार्थ से युक्त पुरुष ही वास्तविक पुरुष है। ऐसे पुरुष को ही अपनी कन्या प्रदान करनी चाहिए। इसी सन्दर्भ में मुनिवर सुबुद्धि के द्वारा पुरुषों के परिचय हेतु दी गई अज्ञात कथाओं का सम्पूर्ण वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है। विद्वानों की मान्यता के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना 14वीं सदी में हुई। इस कथाग्रन्थ में चार परिच्छेद हैं– प्रथम परिच्छेद के अन्तर्गत उदाहरण कथा की कोटि में दानवीर विक्रमादित्य ,युद्धवीर कर्णाट राजकुमार मल्लदेव, दयावीर रणथम्भौर के नरेश हम्मीर देव तथा सत्यवीर चौहान वंश के नरेश चाचिक देव की कथाएं लिखी गई हैं। दूसरे परिच्छेद में कवि ने उदाहरण कथा की दृष्टि से प्रतिभासम्पन्न विशाख, मेधासम्पन्न कोकपण्डित तथा कर्णाट नरेश हरिसिंह देव के मन्त्री सुबुद्धिसम्पन्न गणेश्वर की कथाओं का वर्णन किया है। तृतीय परिच्छेद में कवि के द्वारा संविद्यकथा की दृष्टि से उदाहरण के रूप में धारा नगरी निवासी शस्त्र विद्या में निपुण सिंघल नामक क्षत्रिय धनुर्धर, शास्त्र के जानकार ज्योतिषी वाराहमिहिर, आयुर्वेद के जानकार हरिश्चन्द्र एवं

मीमांसक शबर स्वामी की कथाएं लिखी गई हैं। चतुर्थ परिच्छेद में धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष जैसे पुरुषार्थ से सम्बन्धित कथाओं का वर्णन किया गया है। धर्म के उदाहरण के लिए तत्त्वज्ञानी बोधि नामक कायस्थ, तमोगुण धार्मिक श्रीकंठ नामक ब्राह्मण तथा पापकर्म के लिए पश्चातापपूर्वक पुण्य अर्जन करने वाले राजकुमार रत्नांगद की कथाएं लिखी गई हैं। अर्थमूलक कथाओं में न्याय के द्वारा उपार्जित धन का दान एवं भोग में व्यय करने वाले धनिक की कथा के साथ-साथ कई कथाओं का वर्णन करते हुए तृष्णा से ग्रस्त एक माली की कथा का वर्णन भी किया गया है। काम कथा के अन्तर्गत अनुकूल नायक राजा शूद्रक की कथा, गौड नरेश लक्ष्मण सेन की कथा, महाराज विक्रमादित्य की कथा, धूर्त नायक शशि की कथा तथा विद्या एवं बुद्धि से सम्पन्न होने पर भी अपनी प्रेयसी पटरानी शुभ देवी के वशीभूत रहने के कारण अपने राज्य तथा प्राण को भी गंवा देने वाले महाराज जयचन्द की कथा भी प्राप्त होती है। मोक्ष कथा के अन्तर्गत भर्तृहरि की कथा, विवेकशर्मा की कथा, स्पृहा से रहित मुमुक्षु कृष्ण चैतन्य की कथा तथा लब्धसिद्धि मुमुक्षु की कथा के वर्णनों के साथ इस ग्रन्थ के वर्णन की समाप्ति हो जाती है।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

   i) वेतालपंचविंशतिका में कथाएं हैं –

      (क) 20 (ख) 22 (ग) 24 (घ) 25

   ii) विक्रमादित्य को दिव्य सिंहासन दिया था –

      (क) इन्द्र (ख) विष्णु (ग) नारद (घ) शिव

   iii) पुरुष-परीक्षा रचना है –

      (क) विद्यापति (ख) जम्भलदत्त (ग) कल्हण (घ) सुमेरु

   iv) वाराहमिहिर की चर्चा किस ग्रन्थ में है–

      (क) पुरुष-परीक्षा (ख) वेतालपंचविंशतिका (ग) हितोपदेश (घ) पंचतन्त्र

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

   i) भिक्षुक ने राजा से ..... वृक्ष की डाल पर से शव लाने को कहा।

   (ii) वास्तविक पुरुष को ..... होना चाहिए।

   (iii) राजा विक्रमादित्य का सिंहासन ..... में पाया गया था।

   (iv) पुरुष-परीक्षा नामक ग्रन्थ की रचना ..... सदी में हुई।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

   i) वेतालपंचविंशतिका को हिन्दी में क्या कहते हैं?

   .....

   .....

   .....

   ii) वेतालपंचविंशतिका की कथायें किससे सम्बन्धित हैं?

   .....

.....

.....

iii) राजा ने वेताल से क्या वरदान माँगा?

.....

.....

.....

iv) पुरुष-परीक्षा ग्रन्थ के अनुसार किस प्रकार के व्यक्ति को कन्या देनी चाहिये?

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

1) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए –

क) वेतालपंचविंशतिका

ख) सिंहासनद्वात्रिंशिका

ग) पुरुष-परीक्षा

4.8 सारांश

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के पश्चात् आप वैदिक साहित्य में नीतियों के उद्भव को जानते हुए लौकिक संस्कृत में नीतिसाहित्य के अन्तर्गत सिद्धान्तपरक नीतियों के वर्णन के साथ-साथ उपदेशपरक नीतियों के बारे में भी जान चुके हैं। शुक्र नीति, विदुर नीति, चाणक्य नीति के साथ-साथ भर्तृहरि के नीतिशतकम् में भी अनेक नीतियों के वर्णन किए गए। किन्तु लौकिक संस्कृत साहित्य के कथाग्रन्थों में पंचतन्त्र के अन्तर्गत 5 भागों में विष्णुशर्मा ने अत्यन्त कला कौशल के साथ पशु पात्र प्रधान कथाओं की रचना करके सम्पूर्ण पाठक समाज को जीव जन्तुओं में मानवोचित क्रियाकलापों का दर्शन कराया है। इतना ही नहीं पंचतन्त्र की कथाओं में पशु पक्षी जीव जन्तुओं के संवादों में पदे-पदे केवल व्यावहारिक शिक्षा ही प्राप्त होती है। हितोपदेश में नारायण पण्डित ने चार भागों में अनेक कथाओं की सर्जना करके समस्त पाठक पीढी को व्यावहारिक नीतिशास्त्र से अवगत कराया है। इतना ही नहीं हितोपदेश तो रुचिकर कथाओं के माध्यम से संस्कृत शिक्षण देने का बहुत ही कलात्मक कथाग्रन्थ साबित होता है। कथाओं के माध्यम से नीतियों की शिक्षा देने के क्रम में लोककथा ग्रन्थ भी संस्कृत साहित्य में कम योगदान नहीं रखते। वेतालपंचविंशतिका, सिंहासनद्वात्रिंशिका तथा पुरुष-परीक्षा नामक ग्रन्थ इस बात के साक्षी हैं। इन तीनों ग्रन्थों में निबद्ध कथाओं का अनुशीलन करने से उदीयमान पीढी को लोकनीति, कूटनीति, पुरुषार्थों की प्राप्ति तथा समसामयिक सन्दर्भ में नवचेतना प्रदान करना ही ग्रन्थकारों का सहज उद्देश्य रहा है। यही कारण है कि लोक कथाओं की भाषा सहज रूप से हृदयग्राही भी कही जाती है। गद्य में तथा पद्य में कथाओं का सृजन करके उनमें व्यावहारिक नीतिशास्त्र से सम्बन्धित तथ्यों का वर्णन करके कवियों ने जीवन में अनुशासन, चरित्र निर्माण, युद्धवीरता, दयावीरता, दानवीरता से लेकर धर्म ,अर्थ, काम, मोक्ष सभी की प्राप्ति के साधन को कथाओं के माध्यम से जनमानस के समक्ष रखा है।

4.9 शब्दावली

वाङ्मय – परस्पर वाच्य वाचक से समन्वययुक्त शास्त्र
उद्भावक – संवर्धक
मानवोचित – मनुष्यों के अनुकूल, मनुष्योचित
अभीष्ट – इच्छित, वांछित
कलेवर – आकार
अनुगामी – अनुयायी
आकृष्ट – आकर्षित किया हुआ
मांगलिक – मंगलसूचक, सुखद
स्पृहा – अभिलाषा
मुमुक्षू – मोक्ष पाने का इच्छुक

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) संस्कृत साहित्य का वृहद् इतिहास पंचम खण्ड, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2) संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी ।
3) संस्कृत साहित्य का इतिहास –वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
4) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ शिवमूर्ति शर्मा , दया पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद।

4.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य
(v) असत्य (vi) सत्य
2) (i) मित्रभेद (ii) मित्रभेद (iii) मित्रसम्प्राप्ति (iv) काकोलुकीय

बोध प्रश्न 2

1) (i) (घ) 25 (ii) (क) इन्द्र (iii) (क) विद्यापति
(iv) (क) पुरुष-परीक्षा
2) (i) शिंशपा (ii) दानवीर, धर्मवीर (iii) पृथ्वी (iv) 14वीं
3) (i) वेतालपंचविंशतिका को हिन्दी में वेतालपच्चीसी कहते हैं।
(ii) वेतालपंचविंशतिका की कथायें भिक्षुक, राजा तथा वेताल से सम्बन्धित हैं।
(iii) राजा ने बेताल से वरदान माँगा कि ये कथायें प्रसिद्ध हों तथा समाज में इनका आदर हो।
(iv) पुरुष-परीक्षा ग्रन्थ के अनुसार वीरता, सुबुद्धि, सद्विद्या तथा पुरुषार्थ से युक्त व्यक्ति को कन्या देनी चाहिये।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।